पढ़ कर इस सर्विस मे लग जावेंगें तो वो छूट जावेगी। काम मे तो यह पढ़ाई आवेगी। इतना शौंक होना चाहिये जो कि सर्विस बिगर रह नही सके। प्रदर्शनी मे भी समझाने का शौंक चाहियें। कल्याण कारी सर्विस बिगर और कुछ सूझेगा ही नही। तड़फती रहे तो फिर जिस्मानी छूट जायेगी। हम तो जाती हूँ मन्दिर मे सर्विस करने। पुछना चाहिये पुजारी से कि यह कौन है। कब राज्य किया था? अब कहाँ है? अगर कुछ नही बतावे तो बोलो अन्धश्रधा हो गई। ऐसे-2 बोल कर फिर समझाना चाहियें। हम जानते है कि यह कैसे पुनर्जन्म लेते है। 84जन्म लेते है। ऐसे जब सर्विस मे लग जावे तब वो छूट सके ना। आजकल मौत तो सर पर खड़ा है। उससे पहले तमोप्रधान से सतोप्रधान बनना है। भारत नया था फिर पुराना कैसे बना सो भी तुम जानते हो। ऐसे-2 चिटचैट करेंगें तो और भी दो पाँच सुनने लिए आ जावेंगें। भक्ति मार्ग की बाते भक्ति मार्गवालो को ही अच्छी लगती है। भक्ति से ज्ञान तीखा है। तुम सब जानते हो कि वो सब अन्धश्रधालु है। पॉकेट मे कुछ चित्र आद भी पड़े हुये हो। जब ऐसी सर्विस की तड़फन हो कि हमको तो औरो का कल्याण ही करना है। क्योंकि यह ज्ञान तो सभी के लिये है। सभी को कहना है कि बाप कहते है है मुझे याद करो तो विकर्म विनाश कर स्वीट मे जाना है। ऐसे-2 अन्दर मे सर्विस की उछल आनी चाहिये। बाबा से पूछेंगें तो बाबा क्या कहेंगें। बाबा रोज कहते है कि सर्विस का शौंक हो। बाप आये ही है क्या करने। बुधी मे है कि यह सभी अभी विनाश होना है। अभी नई दुनियां की स्थापना हो रही है। इस लिये ही हमारी शान्ति धाम और नई दुनियां से ही प्रीत है। यही है बेहद की बात। जानते हो यह सभी खत्म होना है। हमारा सम्बन्ध है अब बाप से। फिर हम दैवी सम्बन्ध मे जावेंगें। मित्र सम्बन्धी आद जो भी है उनसे मोहनष्ट होना चाहिये। यही पैगाम पहुचाना है। खयाल करना चाहिये हम कितने अन्धों की लाठी बने है। जैसे बाबा आकर अन्धों को सजा बनाते है वैस ही तुमको भी अन्धो को सजा बनाने की तड़फन होनी चाहिये। फिर दिल पर चढ़ सकते है। लिखते रहे कि बाबा आज इनको समझाया आज मैंने इनकी यह सर्विस की। तो बाबा उत्तर भी देंगे और वो दिल पर भी चढ़ेंगें। बाकी सर्विस ही नही करते है तो दिल पर ही क्या चढ़ेंगें। बाप बैसे बच्चे। और तो कोई है नही जो इनका बेड़ा पार करे। उनको पार लाने का रस्ता बताना है। तुम जानते हो कि हम वैशाल्य से शिवाल्य मे जाते है। तो सभी के यही रस्ता बताओ। भारत शिवाल्य था। अभी 84जन्म बाद वैशाल्य के मालिक बने हो। अब फिर बाप कहते है कि मुझे याद करो। अभी तुम रावण राज्य मे हो अर्थात दुश्मन के घर मे हो। जिसको ही सभी लोग जलाते आते है। मनुष्य जिनमे बुधी नही है उनको पत्थर बुधी कहा जाता है। अब यही तात रहे कि हमको घर जाना है। फिर अपनी राजधानी मे आना है। अवस्था बड़ी अच्छी चाहिये। चलते फिरते उठते बैठते यही खयाल करना है कि अब जो पास्ट हो गया वो था ड्रामा फिर रिपीट होगा। फिर कल्प बाद ऐसा ही करेंगें। ऐसे भी नहीं कि खराब काम किया है तो भी पछताना ना है। पछताना जरूर होता है क्यों कि अपने को घाटा डाल दिया है। विकर्म किया तो बहुत सजायें खानी पड़े। डरना है कहीं माया विकर्म नां करवा देवे जो हमारा पद नीचे हो जावे। तुम जानते हो कि हम आत्मा है तो कोई कुटुटी नही रहनी चाहिये। हम तो मर गये ना। फिर किसके साथ कैसे कुटुटी रखेंगें। सन्यासी ब्रहम ज्ञानी भी ऐसे ही समझते है कि हम ब्रहम है हम ब्रहम मे ही लीन हो जावेंगें। इसलिये ही उनको ब्रहमयोगी तत्वयोगी कहते है। तुम हो राजयोगी। जानते हो भविष्य मे जाकर हम राजा बनेंगें। बहुत-2 सावधान रहना है। यही बाते याद रहे तो पक्के हो जावे। फिर तो ऐसी अवस्था आवेगी जो शरीर का भान भी नही रहेगा। ओ?

ब्रहमा कुमारीज

डायरेक्शन:- मेरठ का सैन्टर बदली हुआ है इसलिये उसका पता लिख रहे है:—

127 प्रेम पुरी,
रेलवे रोड, मेरठ सिटी—

आत्मा सबसे तीखी राकेट है भागने में। इसमे मिशनरी आद की कोई बातनही है। एक शरीर छोड़ा तो यह भागी। अभी तुम बच्चों की बुधी में है कि हमको अब घर जाना है। पतित आत्मा तो जा नही सकती। तुम पावन बन कर जावेंगे। बाकी तो सब सजाये खाकर जावेंगे। सजाये तो बहुत मिलती है नां। वहां तो गर्भ महल में आराम से रहते है। यहां गर्भ जेल में रहने वाले चिल्लाते है। वहां तो बडे आराम से रहते है। आगे चल कर तुम सब देखेंगे। बच्चों ने यह साo किया है। कृष्ण का जन्म कैसे होता है। कोई गन्द की बात नही है। एकदम जैसे कि रोशनी हो जाती है। अभी तुम वैकुण्ठ के मालिक बनते हो। तो वैसा पुरुषार्थ करना चाहिये नां। पवित्र शुध खान-पान होना चाहिये। दाल-भात सबेस अच्छा है। रिषीकेश में सन्यासी लोग क्या खाना लेते है। देने वाले तरफ भी देखते नही है खिड़की से खिड़की चले जाते है। उनमे भी कोई कैसे कोई कैस होते है। सन्यासी लोग कहते है कि हम कर्मसन्यासी है। परन्तु ऐसा होता नही कर्म किये बिना कोई रह नही सक्ते। कर्म सन्यास। यह मीठा नाम रख दिया है। कर्म सन्यास होता नही है। ड्रामा की आदमध्य अन्त को नां जानने कारण बाप कहते है कितने मूर्ख बुधी हो। सभी ऐक्टर्स पार्ट बजा रहे है। कम जास्ती हो नही सक्ते। अभी तुम जानते हो कि हम भी कुछ नही जानते थे। अभी हम ड्रामा की आदमध्य अन्त सृष्टी चक्र को जान गये है। तुच्छ बुधी से अभः हम स्वच्छ बुधी बने है। कई ब्र,कु,कु में तो बड़ा देह-अभिमान है। उनको तो जैस कि यहां पर ही राजाई चाहिये। बर्तन धुलाई करवाना। कपड़ा धुलाई करवाना यह सब देहअभिमान है। बाप तो कहते है मै सरवन्ट हूं। परन्तु बच्चों में देहअभिमान है जिसेस ही गिर जाते है। बाप कहते है जैसा कर्म तुम करेंगे तुमको देख कर सब करेंगे। यहां ही दासियां रख कर बैठती है। बाबा को समाचार देना चाहिये। बोलो हम यहां आते है कुछ सीखने लिये वा तुम्हारी सेवा करने के लिये। आदम पड़ी हुई है तो मालिश करावेगी। बर्तन धुलाई करावेगी ऐस बहुत करते है। बाप कहते है बच्चे ऐस मत करो। खयाल आना चाहिये कि हमको देख कर और भी करने लग पड़ेंगे। बाबा को सारा समाचार देना चाहिये। यह बिगड़ती है गाली भी देती है। बाबा को मालूम पड़ने से सावधान करेंगे। बाबा को रिपोर्ट करनी चाहिये कि ब्रहमा कुमारी कहती है कि हमे दिखाये बिना पत्र नही लिख सक्ते हो। बाबा कहते है तुम भल डायरेक्ट लिखो तुमको डायरेक्ट ही उत्तर भी मिल जावेगा। तीखी बुधी वाले जो होंगे वो समझ लेंगे कि हमारा टीचर कितना अच्छा है। यह टीचर हमको पढ़ाने लायक है वां नही। तुम बच्चों को बहुत धारना करनी है। लड़ना झगड़ना बिलकुल नही चाहिये। सच नही सुनाते है और ही झूठ बालते है तो सत्यानाश हो जाती है। झूठ बोलना तो छोड़ते ही नही है क्यो जेल बर्डस है नां। दो रोज अच्छे चलते है तीसरे रोज फिर माटी पलीत हो जाती है। बुधी खराब हो जाती है। बाप आलराउंड सब बाते === समझाते है। नाटक आद वालो को पकड़ कर चित्र भी अच्छा

****

रीती बनवाओ। बाबा सीढी के चित्र भी अच्छे-2 बनवा रेह है जो कि सबके पास हो। अच्छी चीज देख कर फिर औरों को भी दिखलाने ले आवेंगे। देहली में बहुत अच्छी जगहि में तुम्हारे दो चार चित्र रखे हुये हो तो आप ही तुम्हारा प्रोपोगण्डा हो जावेगा। एक दो को सब भेजते रहेंगे। म्यूजियम बना हुआ है तो सबको कहेंगे कि चल कर देखो। समझाने वाले भी होशियार चाहिये। बुधी में सिवाय एक बाप के और कोई की भी याद नही आवे। अन्त काल जो शिव बाबा को सिमरे वो नारायण पद पा सक्ते है। सर्विस करना भी सीखना है। सेन्टर्स खुलते जाते है। हिम्मते बच्चे मददे बाप तो है ही है। परन्तु अच्छी टीचर भी चाहिये नां। आप समान किसीको बनाते नही है जो कि बाद में सेन्टर सम्भल सके। आपसमान मैनेजर बनावेंगे तो टीचर अच्छी कही जावेगी। पद भी ऊंचा पावेगी। वैवी बुधी भी नहरु होनी चाहिये नही तो कोई उठा कर ले जावेगा। रावण सम्प्रदाय है नां। तो बाबा ने अमर नाथ के लिये भी पत्रे छपवाने के लिये कहा। बैच पत्रे आद छपवाते है उसमे त्रिमूर्ती का ब्लाक भी अच्छा नही बनाते है। नही तो जहां अच्छे ब्लाक बनते है उनका काम है। खबन बना कर भेज देना चाहिये। विशाल बुधी बच्चे बहुत कम है। फिर लिखते भी नही है कि हमारा ब्लाक अच्छा नही है। अच्छा बनवा कर भेजो। आप हीबनाते वा बाप